१ ओअंकार (੧ੳ) सति गुर प्रसादि

सिक्खी – नए युग का धर्म

लेखक : कृपाल सिंघ चन्दन

हिन्दी भाषानुवाद : स. गुरमीत सिंघ (रतलाम म. प्र.)

मूल रूप में रचना

सिख मिश्नरी कालेज (रजि. लुधियाना)

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

जसबीर सिंघ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

Download Free

जसबीर सिंघ

सिक्खी – नए युग का धर्म

सिक्ख धर्म वर्तमान विश्व के तीन-चार धर्मों में से एक प्रमुख है। सबसे छोटी उम्र का होने के बावजूद भी इसने विश्व-चिंतकों को ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है और भरपूर प्रशंसा प्राप्त की है। हालांकि इसके अनुयायिओं द्वारा इसके प्रचार और प्रसार की ओर अभी तक कोई विशेष योजनाबद्ध ध्यान नहीं दिया गया। इस धर्म द्वारा संसार के प्रमुख विचारवानों का ध्यान अपनी ओर खींचने का कारण इसकी नई और अनुपम विचारधारा है जो कि धर्मों की परम्परावादी विचारधारा से भिन्न है और मानव-जीवन के हर पक्ष को प्रभावित करती और अगवाई प्रदान करती है। इसीलिए विद्वान लोग इसको ''एक उत्तम जीवन पद्धति'' का नाम देते हैं। संसार के 500 भिन्न-भिन्न धर्मो का तुलनात्मक अध्ययन करके के पश्चात अमेरिका का धर्म-चिंतक **एच. एल. बाडॉशा** सिक्ख धर्म की सर्वोत्तमता को इस तरह बयान करता है –

''सिक्खी एक सर्वव्यापक अथवा संपूर्ण विश्वधर्म है और मानव मात्र को समान संदेश देता है। इस बात की गुरबाणी में भरपूर व्याख्या की गयी है। सिक्खों को इस तरह सोचना बंद कर देना चाहिए कि सिक्खी एक और अच्छा धर्म है बल्कि इसके विपरीत इस तरह सोचना चाहिए कि सिख धर्म ही नए युग का धर्म है।...... श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रचारित धर्म ही नए युग का धर्म है यह पूर्ण तौर पर पुराने मतों का स्थान लेता है। इस बात को सिद्ध करने के लिए पुस्तकें लिखनी चाहिए और धर्म सच्चाई रखते है पर सिख धर्म सच्चाई से भरपूर है।

''सच्चाई यह है कि सिख धर्म वर्तमान मनुष्य की सब समस्याओं का वाहिद (एक मात्र) हल है।''

सिख धर्म की विचारधारा साहिब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में समाई हुई है। गुरु ग्रन्थ साहिब जी में प्रकट किए गए विचारों से प्रभावित हो कर मिस पर्ल एस. बॅक लिखती है।

''मैंने और भी धर्मों के ग्रन्थ पढ़े हैं, परन्तु मुझे और कहीं भी मन और दिल को स्पर्श करने वाली यह हृदयस्पर्शी शक्ति नहीं मिली, जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में से प्राप्त हुई है। आकार बड़ा होने के उपरान्त भी यह ग्रन्थ एक ठोस प्रभाव डालता है। इसमें मानव-मन की अथाह पकड़ वाली बातों का भेद उजागर किया हुआ है। परमात्मा के पवित्र विचार से लेकर मानव जीवन जिन आम चीज़ों को मानता और हल करता है। उन सब चीज़ों का वर्णन ओर दर्शन इसमें है। इस ग्रन्थ में एक आश्चर्यजनक आधुनिकता है। तब तक मैं हैरान रही जब तक मुझे पता न लग गया कि इन बाणियों की रचना तो कुछ समय पहले 16वीं सदी में हुई है, जबकि खोजियों ने यह ढूँढना शुरू कर दिया था कि धरती के जिस गोले पर हम रहते है, यह सब एक ही है हमने स्वयं ही इस तरह कल्पित रेखाओं से बाँटा हुआ है।........

शायद यह ठोस प्रभाव ही उस शक्ति को स्रोत है, जिसका अनुभव मुझे इस ग्रन्थ में हुआ है। इस बात को मनुष्य, भले वह किसी भी धर्म से संबंधित हो, या नास्तिक ही क्यों न हो, यह वाणी इसको एक ही तरह संबोधन करती है, क्योंकि इसकी आवाज़ मानव-हृदय और कुछ ढूंढ रहे मनों के लिए है।''

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति और विश्व-प्रसिद्धि प्राप्त धार्मिक विद्वान **डॉ. राधा कृष्णन** 'सिक्खी' को ''आम मनुष्य का धर्म'' स्वीकार करते हुए लिखते हैं: –

गुरु नानक ने जिस तरह धर्म को समझा है, वह इतना महान और सीधा-सादा है कि हर आदमी सही अर्थो में धार्मिक व्यक्ति बन सकता है। जो जीवन तुम व्यतीत करते हो, वही कुछ तुम्हारा धर्म है।''

सी. एच. पेन सिक्ख धर्म को जन-साधारण का धर्म कहता है: –

''व्यवहारिक धर्म गुरु नानक देव जी ने दरसाया। उन्होंने मुसलमानों, हिन्दुओं, किसानों, दुकानदारों, सिपाहियों, गृहस्थियों

को अपने काम काज करते हुए कामयाबी प्राप्त करने का रास्ता दिखाया। गुरु नानक थोथी फिलासफियों, रस्म-रिवाजों, जातियों से ऊंचा उठे और लोगों को भी इन (सारहीन फिलासफियों) से ऊँचा उठाया।

पेन सिक्ख धर्म को ''जुझारूओं का धर्म'' लिखता है कि दुनिया में रह के बदी के साथ जूझते हैं-

''गुरु नानक ने वह बात समझ ली थी, जो दूसरे सुधारकों ने नहीं समझी थी कि धर्म वह ही ज़िंदा रह सकता है जो अमल (व्यवहार) सिखावे। जो यह न सिखाए कि दुनिया से किस तरह पलायन करना है, बल्कि यह सिखाये कि दुनियां में अच्छी तरह कैसे रहना है। केवल यह ही न सिखाये कि बुराईयों से कैसे बचना है, बल्कि यह सिखाये कि बुराईयों का सामना करके कामयाब कैसे होना है।''

डंकन ग्रीनलिज धर्म धर्म को **'उत्तम जीवन पद्धति'** और इसकी विचारधारा पर आधारित समाज को **'आदर्शक भाईचारे'** का नाम देता है, वह लिखता है:-

''वह धर्म सचमुच हमदर्दी भरे अध्ययन के योग्य है, जोकि वेगमयी रहस्यवादी भक्ति और प्रभु प्रेम को रोज़ाना ज़िंदगी और सच्ची सामाजिक रिवाजों में बहादुरी के कारनामों से संग जोड़ता है। हम गुरु नानक साहिब के देनदार हैं जिन्होंने लोगों को बताया कि सिक्ख धर्म एक उत्तम जीवन-पद्धति और आदर्शक भाईचारे का नाम है जिस पर प्रभु भक्ति का सच्चा और सदा कायम रहने वाला पानी चढ़ा हुआ है और गुरु साहिब ने आप ऐसा जीवन बीता कर दिखाया है।''

अनेकों विद्वान और हैं जिन्होंने सिक्ख धर्म की अथवा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की विचारधारा की भिन्न-भिन्न पक्षों से प्रशंसा की है इनमें से कुछ इस तरह हैं : सर जान मैल्कम, जे. सी. कनिंघम, एच. एल. विल्सन, मेकालिफ मैक्मम्यूलकर, मिस डारोथी फील्ड, डारोथी शार्ट, बार्थ, कार्पेंटर, ब्लूम फील्ड, विडगरी, मैकनीकोल आदि। इन सभी के विचार बड़े आकार वाली पुस्तक में तो समाविष्ट किए जा सकते हैं एक लेख में नहीं। परन्तु हम संसार-प्रसिद्ध विद्वान इतिहासकार **आर्नल टाइनबी** के विचार निम्न अंकित करना ज़रूरी समझते है, जो सिक्ख धर्म को केवल **''आज का धर्म''** ही नहीं बल्कि **''कल का धर्म''** भी स्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं:-

मनुष्यता का धार्मिक भविष्य भले ही धुंधला हो, एक चीज़ कम से कम देखी जा सकती है। वह यह कि बड़े जीवित धर्म एक दूसरे पर पहले से भी ज्यादा असर डालेंगे क्योंकि धरती के अलग-अलग इलाकों और मानव-नस्ल की अलग-अलग शाखायों में संबंध बढ़ रहे हैं। इस होने वाले वाद-विवाद में सिखों की धार्मिक पुस्तक ''आदि ग्रन्थ'' के पास संसार के धर्मों को कहने के लिए जो कुछ है, उसकी खास महत्ता तथा कीमत है।''

सिख धर्म की जिन विशेषताओं ने संसार भर के धर्म-चिंतकों और विद्वानों का ध्यान अपनी ओर खींचा है आगे हम उनमें से कुछ एक मुख्य विशेषताओं पर विचार करते हैं:-

(1) **धर्म एक जीवन–पद्धति :** सिक्ख धर्म के प्रकाश से पूर्व 'धर्म' कई तरह के कर्म-कांडों, वहमों-भ्रमों पारवण्डों और अंध-विश्वासों तक ही सीमित था। लोग कई तरह के कल्पित देवी-देवताओं की पूजा करते थे, फरिश्तों के अस्तित्व में यकीन करते थे। देवी देवताओं की मूर्तियों की विशेष-प्रकार की सामग्री के साथ पूजा की जाती थी। समाधियों, मड़ियों, मकबरों को भी पूजा जाता था। कुदरती शक्तियों आग (अग्नि-देवता), सूरज, पानी (वरूण देवता), वर्षा (इन्द्र देवता), पेड़ों (पीपल, तुलसी, बबूल, नीम, नारियल), जानवरों (गाय, साँप-शेषनाग, गुगा, मगरमच्छ) आदि की पूजा की जाती थी। कई तरह के यज्ञ किए जाते थे जहां वेद मन्त्रों का उच्चारण होता था और देवी-देवताओं की खुशी के लिए जानवरों और मनुष्यों की बलि दी जाती थी। लोग अपने-अपने मत (धर्म) अनुसार कई तरह के भेस धारण करते थे, जैसे हिन्दू जनेऊ, दो धोतियों, कई तरह के तिलक, शंक-चक्र आदि धार्मिक चिन्हों को शरीर पर छपवाते थे और योगी खिंथा (गोदड़ी), डंडा, सिंगी आदि धारण करते, कान में छेदकर मुंद्रा पहनते और शरीर पर राख मल लेते थे। आत्मिक शुद्धि की खातिर लोग घर-बार त्याग कर जंगलों अथवा पहाड़ों पर जा बसते थे। वहां कंद-मूल खाकर गुज़ारा करते थे। मनुष्य जीवन के भिन्न-भिन्न संस्कार-जनेऊ संस्कार, ब्याह संस्कार, मृतक-संस्कार के समय पुजारी पूजा करते थे और 'दान' प्राप्त करते थे। मुक्ति की खातिर आत्म-हत्या भी की जाती थी, जैसे कि इलाहाबाद में 'अक्षयवट' नाम के बरगद के पेड़ से लोग छलांग लगाकर आत्महत्या कर लेते थे। मरने से पहले, घर से लाए

धन - माल पंडितों को 'दान' कर देते थे। इस तरह की बनारस में एक आरा (करवत) था जिससे (दान पुण्य करने के उपरान्त) शरीर कटा लेने से मुक्ति प्राप्त होना माना जाता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही स्वर्ग - नर्क (बहिश्त - दोज़ख) के अस्तित्व में यकीन करते थे। नर्कों में पापियों को बड़ी खोफनाक सजाएँ देना और स्वर्गों में हर तरह की एश - ओ - इशरत की प्राप्ति होने का विचार लोगों में बहुत प्रचलित था।

सिक्ख धर्म ने 'धर्म' को ऐसे अन्य सैकड़ों और अंधविश्वासों तथा कर्म - कांडों के गोरखधंधे में से निकाला। धर्म को एक जीवन - पद्धति (Way of Life) के रूप में प्रकट किया अथवा धर्म को ऐसी विचारधारा का रूप दिया जो कि मनुष्य के समूचे जीवन में उसका नेतृत्व कर सके। गुरबाणी और गुरु इतिहास से यह बात भली भांति प्रकट हो जाती है कि जहां गुरु साहिबान ने अंधविश्वासों और धर्म - कांडों की जगह पर एक अकाल पुरुष की पूजा (नाम सिमरण) तथा गुण गायन करने पर ही ज़ोर दिया, वहां सामाजिक कुरीतियां दूर की, रुपये - पैसे की बाँट में अपने विचार प्रकट किए और राजसी अत्याचारों के विरुद्ध डटने के लिए लोगों को संगठित किया। गुरु साहिब द्वारा धार्मिक क्षेत्र में लायी गयी क्रांति का नतीजा ही था कि सदियों से पैरों तले रौंदे जाते लोग अत्याचारी राजाओं को ललकारने लग पड़े और अंत में सत्य - धर्म का राज्य स्थापित करने में कामयाब हो गए। आज के विद्वान भी सिक्ख धर्म की इसी बात से प्रशंसा करते है कि यह धर्म केवल धर्म - स्थानों में की जाने वाली पाठ - पूजा तक ही सीमित नहीं बल्कि आज के मनुष्य की हर तरह की समस्याओं का समाधान पेश करता है।

(2) **धर्म - स्थान गुरुद्वारे जीवन - पद्धति के शिक्षा - केन्द्र :** अन्य धर्मों की तरह सिक्खों के धर्म - मंदिर गुरुद्वारे केवल पाठ - पूजा के स्थान ही नहीं है। इनमें जहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ, कथा तथा कीर्तन किए जाते है, वहां व्याख्यानों द्वारा धर्म - सिद्धांतों का प्रचार किया जाता है, जिससे कि लोग अपने नित्य प्रति के जीवन में उससे सेध ले सकें। गुरु साहिबान के समाज - सुधार प्रति प्रकट किए गए विचारों को उससे सेध ले सकें। गुरु साहिबान के समाज - सुधार प्रति प्रकट किए गए विचारों को यहां अमली (व्यावहारिक) शक्ल दी जाती है। जैसे गुरु पातशाह ने जाति - पाति और अमीरी - गरीबी के भेद - भाव के विरुद्ध जेहाद छेड़ा था। उनके ऐसे विचारों की पूर्ति के लिए गुरुद्वारे में लंगर की प्रथा चालू की गई थी और सरोवर बनाए गए थे। लंगर में आज तक प्रत्येक धर्म, जाति, अमीर - गरीब सभी मनुष्य संग मं बैठकर लंगर छकते है और सरोवरों में इक्टठे स्नान करते है। उस तरह लंगर और सरोवर मनुष्यों में पड़े हुए हर तरह के भेद - भाव दूर करते हैं। यदि गुरु साहिब ने स्त्री जाति के पक्ष में आवाज़ उठाई तो गुरुद्वारे में उनको आने की स्वतंत्रता भी दी। केवल यह आज़ादी ही नहीं दी बल्कि हर तरह के धार्मिक फर्ज़ निभा सकती है, कीर्तन, कथा और व्याख्यान कर सकती है। श्री गुरु अमर दास जी ने स्त्रियों को धर्म - प्रचारकों के तौर पर भी नियुक्त किया था। गुरु साहिब ने पर्दे (घूंघट) कि विरुद्ध आवाज़ उठाई थी, उसके साथ ही उन्होंने सिख स्त्रियों को यह हुक्म दिया था कि वह गुरुद्वारे में घूंघट निकाल के ना आवें। सतगुरुओं ने गुरुद्वारों की इमारतों में दवाखाने (अस्पताल), पिगलवाड़े और यतीमखाने बनवाए। यहां तक कि बच्चों को संसारिक विद्या देने का प्रबंध भी गुरुद्वारों में किया गया।

गुरु साहिबान ने गुरुद्वारों को धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों के साथ - साथ राजसी गतिविधियों का केन्द्र भी बनाया। साधारणत: वक्त के अत्याचारी राजाओं के विरुद्ध प्रचार गुरुद्वारों में से ही करते थे, न कि गुरुद्वारों से दूर अलग स्टेज लगाकर। **'अकाल तख्त'** देखने को एक गुरुद्वारा ही तो है, परन्तु छठे पातशाह यहां तख्त पर विराजमान होते थे, जिसको 'सच्चा तख्त' कहा जाता था और दिल्ली के तख्त को झूठा तख्त। सिक्ख यहां बढ़िया घोड़े और हथियार लाकर गुरु पातशाह को भेंट करते थे। सिखों को फौजी ट्रेनिंग भी यहां ही दी जाती थी। दशम - पातशाह ने ज्यादातर युद्ध गुरुद्वारों में से ही लड़े थे, जिनको किलों का रूप दिया गया था। सिक्खों ने अंग्रेज़ों को भारत से निकालने के लिए आज़ादी की लड़ाई भी गुरुद्वारों में से ही आरम्भ की थी।

यह कुछ एक उदाहरण ही सिद्ध करने के लिए काफी है कि गुरुद्वारे समूची सिक्ख जीवन - पद्धति के शिक्षा केन्द्र है, न कि केवल पाठ - पूजा करने के स्थान।

(3) **एक प्रभु में विश्वास तथा और देवी - देवताओं का विरोध :** सिक्ख धर्म ने अवतार के सिद्धांत का तख्त विरोध किया, जिसके अधीन यह माना जाता था कि प्रभु मनुष्यों की तरह देवताओं के रूप में जन्म लेता है। इस विश्वास के परिणामस्वरूप अनेकों देवी - देवताओं के रूप में जन्म लेता है। इस विश्वास के परिणामस्वरूप अनेकों देवी - देवताओं की पूजा आरम्भ हो गई

थी, जो मंदिरों में मनोकल्पित मूर्तियां बना के की जाती थी। इस सिद्धांत का विरोध करते हुए गुरु साहिबान ने कहा कि वह मुँह ही जल जावे तो यह कहता है कि प्रभु जन्म लेता है: -

सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी।

उचारणः मुख, जित, ठाकुर (भैरउ, म: 5, 1136)

सतगुरुओं ने कहा कि लोग समय - समय के राजाओं को अवतार जान कर उनकी पूजा कर रहे हैं, परन्तु यह अवतार प्रभु का अन्त नहीं पा सके। यह अवतार भी साधारण लोगों की तरह माया - जाल में फंस रहे हैं और अंत को मौत का शिकार हो गए -

जुगह जुगह के राजे कीए, गावहि करि अवतारी ।।

तिन भी अंतु न पाइआ ताका, किआ करि आखि वीचारी ।।

उचारणः कर, अंत आख (आसा, म: 3 अष्टपदियां, 423)

अवतार न जानहि अंतु ।। परमेशर पारब्रहम बेअंतु ।।

उच्चारणः अंत, बेअंत (रामकली, म: 3)

दस अउतार राजे होइ वरते, महादेव, अउधूता ।।

तिन्ह भी अंत ना पाइओ तेरा, लाइ थके बिभूता ।। (सूही, म: 5, 747)

- अंत मरे पछताए पृथी पर, जो जग में अवतार कहाये ।।

रे मन, लैल, अकेल ही काल के, लागत काहे न पायंन धाये ।। (33 सवैये, 23 वां, पा. 10)

देव - पूजा को त्यागने और एक प्रभु की सिफ्त - सलाह (स्तुति) करने का आदेश देते हुए दशम - पिता फरमाते है: -

कोऊ दिजेश को मानत है, अरु कोऊ महेश को ईश बतै है ।।

कोऊ कहै बिशनो बिशनाइक, जाहिं भजे अघ ओघ कटै है ।।

बार हजार विचार अरे जड़, अंत समै सभ ही तजि जै है ।।

ताही को ध्यान प्रमानि हिए, जोऊ था, अब है अरू आगे ऊ हवै है ।।

उचारणः अर, तज, प्रमाप्ता, अर (33 सवैये, पा. 10)

गुरबाणी में बड़ा स्पष्ट कहा गया है कि देवी - देवताओं की पूजा को त्यागो और केवल एक अकालपुरुख की पूजा करो

जउ जाचऊ तउ केवल राम ।। आन देव सिंउ नाही काम ।। (भैरउ, कबीर जी, 1162)

यथा

- हउ तउ ऐक रमईआ लैहउ ।। आन देव बदलावनि दैहउ ।। (गौंड, बाणी नामदेव जी की, 764)

यथा

न देव दानव नरा ।। न सिध साधिका धरा ।।

असति एक दिगरि कुई ।। ऐक तुई ऐक तुई ।। (वार माझ, म: 1, 144)

एक प्रभु की पूजा का उपदेश देने के साथ - साथ गुरबाणी में प्रभु के स्वरूप को भी अच्छी तरह बयान किया गया है अथवा

प्रभु के गुणों का बयान किया गया है। मूल मंत्र में स्पष्ट किया गया कि प्रभु केवल एक है, वह निरंतर व्यापक है, वह स्थायी अस्तित्व वाला है, वह इस ब्रह्माण्डों का रचनाकार है और अपनी रचना में व्यापक है, वह निडर निर्भय है। समय की पाबन्धियों में नहीं अथवा जन्म - मरण के चक्कर में नहीं आता, अजन्मा है, उसका प्रकाश उसके स्वयं से ही हुआ है अथवा उसको किसी ने पैदा नहीं किया और ऐसा प्रभु गुरु की कृपा द्वारा किया जा सकता है: -

१ - ओंकार (੧ੴ) सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरू

अकाल - मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।

उचारण : इक ओंकार, सतनाम, पुरख, निरवैर, मूरत, प्रसाद ।

(4) **शब्द - गुरु की अगवाई :** सिक्ख धर्म ने ''शब्द'' को ही गुरु किया है, जिसका भाव है वह ज्ञान जो गुरु साहिबान को प्रभु के साथ मिलने के बाद प्राप्त हुआ है जिसको गुरु ग्रन्थ साहि के रूप में संकलित किया गया है अथवा ऐसे वह लेवे कि गुरबाणी ही गुरु है, गुरबाणी अमर है इसके विपरीत वह नाशवान है और नष्ट होने वाली चीज़ को गुरु नहीं माना जा सकता।

गुरु नानक देव जी ने बहुत स्पष्ट करके लिखा है कि शब्द ही गुरु है। इसके बिना संसार के लोग अज्ञानी बने रहते है, कष्ट उठाते हैं, परन्तु शब्द का दामन पकड़ने वाले, के वे संसार - सागर तैर जाते है, अपना जीवन सफल कर लेते हैं: -

पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ।।

शब्द गुरु सुरति धुनि चेला ।। (रामकली, म: 1, सिध गोष्टि - 1, 634)

यथा

- सबदु गुर पीरा, गहिर गंभीरा, बिनु सबदै जगु बउरानं ।।

पूरा बैरागी सहजि सूभागी, सचु नानक मनु मानं ।। (राग सोरठि, म: 1, 634)

जो मनुष्य गुरबाणी के साथ प्रीत लगाते है, गुरबाणी को गुरु समझ के बाणी के उपदेशों को हृदय में धारण करते और मानते हैं, उनको यह प्रतीत हो जाता है कि गुरबाणी जहां उनको प्रभु संग जोड़ती है, वहां उनके जीवन में आई समस्याओं का समाधान करती है: -

बाणी गुरु, गुरु है बाणी, विचि बाणी अंम्रितु सारे ।।

गुरु बाणी कहै, सेवकु जनु मानै, परतखि गुरु निसतारे ।। (नट नाराइन, म: 4,972)

बाणी को गुरु साहिब ने अपनी रचना नहीं माना बल्कि अकाल पुरुष द्वारा हुई प्रेरणा स्वरूप अपने मुख से निकल वाक्य माना है। यही कारण है कि बाणी का संपादन करने वाले और बाणी को (गुरु) ग्रन्थ साहिब में संकलित करने वाले श्री गुरु अर्जुन देव जी भी, बाणी का सत्कार उस तरह ही करते थे जैसे कि उनके सिख करते थे।

गुरु नानक देव जी से गुरु गोबिन्द सिंह जी तक भले ही देहधारी गुरु की परम्परा जारी रही है तो भी सभी सतगुरुओं ने इस बात का प्रचार नहीं किया कि उनकी देह गुरु है, बल्कि बाणी में इस बात को बार - बार दोहराया है कि शब्द अथवा गुरबाणी ही गुरु है। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने शरीर त्यागने से पहले (गुरु ग्रन्थ साहिब जी) को गुरु पद बख्शा और देहधारी गुरु की परम्परा को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया। उन्होंने ग्रुरु ग्रन्थ साहिब और पंथ को सांझे रूप में गुरुपद दिया। तैयार - बर - तैयार पांच सिख गुरु पंथ का प्रतिनिधित्व करते हुए गुरु के शारीरिक फ़र्ज़ों को निभाते है, पर प्रमुखता 'बाणी' की है।

अठारहवीं सदी के प्रारंभ से लेकर आखिर तक, सिख पहले तो अपने अस्तित्व को स्थिर रखने के लिए संघर्ष करते रहे और इस पवित्र कार्य के लिए उन्होंने अनेकों तरह की कुर्बानियां दीं, कभी छापामार - युद्ध नीति को अपनाया और कभी वैरियों

साथ आमने-सामने हो कर लड़े और फिर अपना राज्य कायम करने हेतु प्रयत्नशील रहे जिसके फलस्वरूप पहले सिक्ख मिसलों का राज्य और फिर महाराजा रणजीत सिंघ का राज्य अस्तित्व में आया। इस सारे समय (1708 ई. से 1799 ई.) तक सिक्खों ने केवल ''गुरु ग्रन्थ'' (गुरुबाणी) से ही अगवाई प्राप्त की और यह बात संसार के समक्ष प्रत्यक्ष हो गई कि शब्द गुरु की अगवाई के साथ कौम जीवन बना लेती है, युग पलट देती है अथवा क्रान्ति ला देती है।

''शब्द गुरु के सिद्धान्त को केवल सिक्ख धर्म में ही माना और प्रचारित किया गया है और किसी धर्म में नहीं।''

शरीर को कोई महानता न देने और शब्द को गुरु स्वीकार करने के सिद्धांत के कारण ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में छह गुरु साहिबान की बाणी के साथ 15 भक्तों 3 गुरसिखों और 11 भट्ठों की बाणी शामिल की गयी है। देखने को भले यह 35 भिन्न-भिन्न महापुरुष हैं पर विचारधारा एक सामान है, जिसके शब्द रूप में निरूपण किया गया है। सब भक्तों की बाणी को (जिन में शेख फरीद जी, सूफी फ़कीर भी है) गुरु नानक पातशाह ने अपनी प्रचार-यात्राओं में भिन्न-भिन्न स्थानों में स्वयं एकत्र किया था। यह पोथी गुरुपद की रस्म के समय गुरु साहिब के दूसरे गुरु तक पहुंची। बाणी बाबा सुंदर जी (रामकली), सद, भाई सत्ता और भाई राय बलवंड की वारसद और ग्यारह भट्ठों की बाणी शामिल करके, अर्जुन पातशाह ने इस सारी बाणी को ''श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी'' का रूप दिया। इसके उपरान्त गुरु गाबिन्द सिंह जी ने इस सारी बाणी में गुरु तेग बहादुर जी की बाणी शामिल की।

यदि केवल देह (शरीर) को गुरु स्वीकार किया जाता तो केवल गुरु साहिबान की बाणी को ही गुरु का दर्जा मिलना था, पर गुरु नानक पातशाह ने जहां संसार को ''शब्द गुरु'' का विस्तृत सिद्धान्त दिया, वहां भक्तों और सूफी संतों की बाणी स्वयं एकत्र करके और अपनी बाणी के साथ एक ही पोथी में दर्ज करके शब्द-गुरु के सिद्धांत को व्यवहारिक रूप प्रदान किया।

(5) **नाम सिमरण द्वारा आचरण का निर्माण और कौमी क्रान्ति :** सिक्ख धर्म में नाम-सिमरण पर बहुत ज़ोर दिया गया है, जिसका अर्थ है प्रभु की बढ़ाई करनी, उसके गुणों का गायन करना।

गुरु साहिब इस विचार को मानते थे कि प्रभु अकाल पुरुष समस्त गुणों और अच्छाईयों को स्रोत तथा खज़ाना है। उसकी बढ़ाई करने वाले (नाम जपने वाले) मनुष्य के मन में जहां अकाल-पुरुष के गुणों का निवास हो जाता है जहां विचारों अथवा पाप कर्मों के लिए प्रेरित करने वाले संस्कारों से उसकी मुक्ति हो जाती है। प्रभु का नाम जपने वाले ही उस (प्रभु) की तरह निडर (निर्भय), निरवैर, मौत के डर से रहित, कृपालु, सच्चे, संतोषी, इंसाफ-पसंद, सर्वस्व का भला चाहने वाले, गरीबों, निःसहाय, बेआसरों की रक्षा करने वाले, जब्र, ज़ुल्म और धक्केशाही का विरोध करने वाले बन जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और अनेकों तरह के विकार तथा बुरे विचार ऐसे नाम रसीये लोगों ने नज़दीक भी नहीं फटकते।

इस तरह सिफत-सलाह स्तुती द्वारा मनुष्य के मन में से धीरे-धीरे कुसंस्कार खत्म हो जाते हैं और अकाल-पुरुष के गुण मन में समा जाते है। अकालपुरुष और मनुष्य के गुण करके सांझ बढ़नी आरंभ हो जाती है और अंत में जब प्रभु और मनुष्य में गुण करके कोई अंतर नहीं रहता तो प्रभु और मनुष्य एकमेव हो जाती है इसलिए गुरबाणी में कहा गया है:-

भरीऐ मति पापा कै संगि ।। ओहु धोपै नावै के रंगि ।। (जपु जी-4)

यथा

-गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ।। बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ।। (गउड़ी सुखमनी, म: 269)

यथा

-गुण गोबिंद गावहु सभि हरि जन, राग रतन रसना आलाप।।

कोटि जनम की त्रिसना निवरी, राम रसाइण आतम ध्राप ।।

(बिलावल, म: :4-729)

यथा

–नानकु आखै एहु बीचारु ।। सिफती गंढु पवै दरबारि ।।

(वार माझ, मः 1–143)

यथा

सांची बाणी सूचा होइ ।। गुण तो नामु परापति होइ ।।

गुण अमोलक पाए ना जाहि ।। मनि निरमल साचै सबदि समाहि ।।

से बडभागी जिन्ह नामु धिआइआ ।। सदा गुणदाता मंनि बसाइआ ।। 3 ।।

जो गुण संग्रहिं तिन्ह बलिहारै जाउ ।। दरि साचै साचे गुण गाउ ।।

आपे देवै सहजि सुभाइ नानक कीमति कहणु न जाइ ।।4।।

(आसा, मः 3-369)

नाम-सिमरण वाले मनुष्य प्रभु को अंग-संग प्रतीत करते है, वे दृढ़ विश्वासी होते है कि प्रभु उनकी हर मुश्किल समय सहायता करेगा। ऐसे विश्वास और अनुभव होकर इस तरह के मनुष्य बड़ी-बड़ी ताकतों से लोहा लेने के लिए तैयार हो जाते है और मौत को मखौल करने लग जाते है।

गुरु साहिबान ने जहां नाम-सिमरण द्वारा मनुष्य के चरित्र को ऊँचा व पवित्र बनाया और आत्मा को बलवान किया, वहां ऐसे मनुष्यों का ऐसा समाज सुरजीत किया जो कि अकाल-पुरुष के (ईश्वरीय) गुणों से भरपूर था और जिसने हर तरह की गुलामी अथवा डर (जैसा कि धार्मिक कर्म-कांडों, अंधविश्वासों और पूजारी वर्ग की गुलामी, समाज के गलत मूल्यों) सामाजिक मूल्यों) की गुलामी और अत्याचारी राजाओं की गुलामी को दूर निकाल फैंका। निर्भय और निवैर लोगों के इस समाज ने हज़ारों सालों की गुलामी (विदेशी हकूमत) से मुक्ति पाई और अपना राज्य कायम कर लिया। बुज़दिलों में से बढ़िया योद्धा और जंगी-जनरैल पैदा हुए और सदियों से गुलामी का जीवन बसर करने वालों में से आदर्श शासक पैदा हुए। यह सब नाम-सिमरण की करामात ही तो है।

(6) **जीवन–मुक्ति का सिद्धान्त :–** सिक्खी के प्रकाश से पहले कई धर्मो ने मुक्ति का सिद्धान्त दिया था, पर वह मौत के पश्चात् मुक्ति' के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे या फिर नर्को के डरावे और स्वर्गो के लालच दिए जाते थे। सिक्ख धर्म ने लोक और परलोक (मौत से पहले और बाद में) दोनों में मुक्ति के सिद्धांत का प्रचार किया। जीते जी मुक्ति (जीवन-मुक्ति) से भाव है माया में रहते हुए माया के प्रभाव से मुक्त रहना, विकारों से मुक्त होना और हर समय प्रभु-प्यार में मस्त रहना तथा मौत के पश्चात् मुक्ति का भाव है जन्म-मरण (आवागवन) के चक्कर से मुक्ति और आत्मा का सदा के लिए परमात्मा में लीन हो जाना।

जीवन-मुक्ति के संबंध में कुछ निम्नलिखित दिए जा रहे है गुरु-वाक्य है, जिसमें कि बात ज्यादा स्पष्ट हो सके:

ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ।। जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ।।

(गउड़ी सुखमनी, मः 5, 294)

यथा

–तजि अभिमान मोह माइआ, फूनि भजन राम चितु लावउ ।।

नानक कहत मुकित पंथ इहू, गुरमुखि होइ तुम पावउ ।।

(गउड़ी सुखमनी, मः 9, 219)

यथा

– प्रभु की आगिआ आतम हितावै ।। जीवन मुकति सोऊ कहावै ।।

तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ।। सदा अनंदु तह नही बिओगु ।।

(गउड़ी सुखमनी, म: 5, 265)

यथा

– जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ।। गुरमुखि होइ त सचि समाए ।।

(आसा, 1, 412)

– जीवन मुकति गुर सबद कमाए ।। हरि सिउ सद ही रहै समाए ।।

गुर किरपा ते मिलै वडिआई ।। हउमै रोगु न ताहा हे ।।

(मारु म: 3, 1058)

श्लोक म: 9 में गुरु तेग बहादुर जी ने जीवन-मुक्त मनुष्य के लक्षण दिए है। ऐसा मनुष्य स्तुति-निंदा से ऊपर उठ जाता है, अहंकार तथा अन्य विकार उसका साथ छोड़ जाते है। उसका सांसारिक वस्तुओं से मोह कम हो जाता है, दु:ख और सुख उसके मन पर प्रभाव नहीं डालते तथा वह हर समय प्रभु प्यार में रंगा रहता है। गुरुदेव फरमाते हैं: -

उसतति निंदिआ नाहि जिहि, कंचन लोह समानि ।।

कहु नानक सुन रे मना, मुकति ताहि तै जानि ।। (14)

– हरखु सोग जा कै नहीं, बैरी मीत समानि ।।

कहु नानक सुनि रे मना, मुकति ताहि तै जानि (15)

– जिहि प्रानी हउमै तजी, करता रामु पछानि ।।

कहु नानक वहु मुकति नरु, इह मन साची मानु (11)

– जो प्रानी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार ।।

कहु नानक आपन तरै, अउरन लेत उधार (22)

– जिह घटि सिमरनु राम को, सो नरु मुकता जानु ।।

तिहि नर हरि अंतरु नहीं नानक साची मानु (43)

(श्लोक, म: 1, 1426 से 28)

जहां सिख धर्म ने जीवन-मुक्ति का सिद्धान्त संसार को दिया, वहां **स्वर्ग – नर्क** के अस्तित्व को पूरी तरह रद्द कर दिया। जीवन के पश्चात होने वाली मुक्ति को जगह पर प्रभु संग लिवलीनता को ही तरजीह (प्राथमिकता) दी गई है: -

सुरग मुकति बैकुंठ सभि बांछहि, निति आसा आस करीजै ।।

हरि दरसन के जन मुकति न मांगहि, मिलि दरसन त्रिपति मनु थीजै ।। (कल्याण, म: 4, 1324)

यथा

– कई बैंकुठ नाही लवै लागे। मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे ।। (मारु, म: 5, 1067)

यथा

–कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा, संतन दोउ रादे ।।

हम काहू की काणि न कढ़ते, अपने गुरपरसादे ।। (रामकली, कबीर जी, - 161)

यथा

–कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ, सतिगुर के परसादि ।।

चरन कमल की मउज महि, रहउ अंति अरू आदि ।। (श्लोक, कबीर जी - 1360)

(7) **ब्राह्मणी विश्वासों और कर्मकाण्डों का विरोध :–** भारतीय समाज में, धर्म के क्षेत्र में, ब्राह्मणों (पंडितों) का सदियों से बोलबाला रहा है। स्मृतियों और शास्त्रों ने ब्राह्मणों (पंडितों) का सदियों से बोलबाला रहा है। स्मृतियों और शास्त्रों ने ब्राह्मणों को भारतीय समाज में सर्वोत्तम स्थान दिया हुआ था और धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने-पढ़ाने व और सारे कर्म-धर्म करने का इनको ही अधिकार था। इन लोगों ने धर्म के नाम पर ऐसे विश्वास, रीतियों-रस्में तथा कर्-कांड प्रचलित किए हुए थे कि बिना कोई उधम किए ही ये सारी उम्र बड़ी सरलता से गुज़ार सकते थे।

ब्राह्मण वेदों, स्मृतियों, शास्त्रों और पुराणों की विचारधारा के प्रचारक थे, जिसके कारण ये मंत्रों के रटन, अवतारों की पूजा, देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा, कुदरती शक्तियों (सूरज, अग्नि, वरुण आदि पशुओं (गाय, कछुआ, साँप, स्वान, मगरमच्छ) की पूजा, वृक्षों (पीपल, बबूल, तुलसी, नीम) की पूजा, शिवलिंग की पूजा करवाते थे। पवित्र-अपवित्र, सूतक-पातक, चौके की शुद्धि व्रत, अच्छे और बुरे दिनों का वहम, तीर्थो की यात्रा और तीर्थ-स्नान नर्क-स्वर्ग के विचार, भूत-प्रेतों में निश्चय, ग्रहों की पूजा, समाधियों की पूजा, जात-पात (वर्ण-भेद), आश्रम धर्म (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यास) आदि ब्राह्मणी विचारधारा के अलग-अलग अंग है। इसके सिवाय ब्राह्मण मुहूर्त निकालते, यज्ञ करवाते, मनुष्य के जन्म, नामकरण, धर्म-प्रवेश (जनेऊ संस्कार) ब्याह, मौत और मौत के बाद ''धर्म-कर्म'' करते और ब्याह और दान-पुण्य लेते थे। ये विशेष धार्मिक भेस धारण करते थे, जिसमें दो धोतियां सिर पर कपड़ा, जनेऊ धारण करना, कई तरह के तिलक लगाने, गले में माला और शालिग्राम लटकाने आदि शामिल थे।

गुरु-पातशाह और निर्गुण भक्ति-धारा के भगतों ने ब्राह्मणों की सरदारी को चुनौती दी और उसकी विचारधारा, धार्मिक भेष, कर्म-काण्डों और दान-पुण्य के खोखलेपन को लोगों के सामने जाहिर किया।

नोट : इस संबंध में गुरबाणी में से गुरु फरमान देने से इस लेख का आकार बहुत बड़ा हो जावेगा और विस्तार साहित चर्चा कराने के लिए एक अलग लेख की ज़रूरत है। इसलिए पाठकों को सलाह देवेंगे कि वे कालेज की पुस्तकों:

'न्यारा खालसा', सिख जीवन पद्धति', 'हिन्दूमत और गुरमत'

तथा

'सिख धर्म फिलासफी–भाग 4 और 5' को पढ़ने की कृपालता करें।

(8) **सब सिखों को धर्म प्रचार का अधिकार –** जहां कहीं भी धर्म-प्रचार और धार्मिक रस्में अदा करने का अधिकार केवल पुजारी वर्ग को दिया गया है, वहां समय बीतने पर पुजारी वर्ग भ्रष्ट होता रहा है। हिन्दू धर्म में ब्राह्मणों की सरदारी ने क्रूर रूप धारण कर लिया था। अंधविश्वासों, गलत रस्म रिवाजों, जीवन संस्कारों, कर्म-काण्डों और व्यवहारों का जाल बिछा कर ब्राह्मण दान-पुण्य द्वारा अपने लिए ऐश-ओ-इशरत का सामान पैदा कर रहे थे। यहां तक कि मंदिरों में ''देव-दासियाँ'' रख के ये लोग-आम व्यभिचार कर रहे थे जिसकी धार्मिक स्वीकृति दे दी गई। क्योंकि धर्म-पुस्तकों को पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार इनको ही था, ये धर्म-पुस्तकों के मन-माने अर्थ करते और लोगों को लूटते थे क्योंकि धर्म-पुस्तकों

की बोली आम लोगों की समझ में नहीं पड़ती थी। ऐसे ही काजी भी धर्म पुस्तकों के मन-माने अर्थ करके अपने पिछलग्गूओं को लूटते थे। गुरु नानक साहिब के समय इन्साफ़ का काम इनके हाथ था और ये कचहारियों में बैठ के इंसाफ़ करते थे। गुरु जी ने बाणी में ज़िक्र किया है कि ये लोग रिश्वत लेकर फ़ैसले बदलते रहते हैं। ये लोग ही थे जो कि शरीयत का सहारा लेकर मुसलमान शासकों को गैर-मुसलमानों पर अत्याचार करने के लिए प्रेरित करते थे।

इसाईयों में पादरियों ने पांचवी सदी में धर्म-सेवा की जगह पर राज्य-काज में हिस्सा लेना आरंभ कर दिया और कौसंलर चुने गए। इन लोगों ने धन प्राप्ति की खातिर ही लोगों को स्वर्गो में जगह आबंटित करनी शुरू कर दी थी। कोई जितने ज्यादा पैसे देता, उतना ही बढ़िया स्वर्ग उसे मिलता था। राजाओं की खुशी हासिल करने के लिए इन लोगों ने यह विचार फैलाया था कि राजा ईश्वर द्वारा नियुक्त करके भेजे जाते है। ये लोग इतने भ्रष्ट हो गए थे कि जर्मनी के मार्टिन लूथर (1483-1546) ने इनके विरुद्ध लहर आरम्भ की। उन्होंने पादरियों के मंद कर्मो का पर्दा-फाश किया।

गुरु साहिब ने सभी सिखों को धर्म-प्रचार और धार्मिक-रीतियों को निभाने का अधिकार दिया। हरेक सिख स्त्री और पुरुष गुरुद्वारे के ग्रन्थी का फ़र्ज निभा सकते है। गुरबाणी की कथा, कीर्त्तन और धर्म-व्याख्यान कर सकता है। जब बाबा बुढ़ड़ा जी को हरिमंदिर साहिब में पहले ग्रन्थी साहिब की सेवा दी गई थी तब उन्होंने कार्य व्यवहार करने का मार्ग नहीं छोड़ा। गुरु नानक देव जी ने आम लोगों को ही धर्म की सेवा में लाया था। ये लोग इस ''सेवा'' को जीवन-निर्वाह के लिए उसे जीविका के साधन हेतु नहीं बरतते थे बल्कि अपना कार्य व्यवहार करते हुए निष्काम धर्म -सेवा करते थे। गुरु अमरदास जी और गुरु रामदास जी ने जो प्रचारक नियत किए थे। वे भी अपना कार्य व्यवहार करते थे। आज भी हज़ारों सिख अपना कार्य व्यवहार करते हुए ग्रंथियों, कीर्तिनकारों, कथावाचकों और धार्मिक व्याख्यानकारों की सेवा निभा रहे है।

दशम पिता ने तो गुरु-दीक्षा देने का अधिकार भी उच्च पवित्र जीवन वाले आम सिखों को ही दिया। अमृत छकाने का फर्ज़ पादरियों, काज़ियों, ब्राह्मणों की तरह केवल ग्रन्थी ही नहीं निभाते बल्कि कोई भी पांच तैयार-बर-तैयार सिंघ निभाते हैं।

(९) **गृहस्थियों का धर्म –** सिक्ख धर्म के प्रकाश के समय त्यागवाद, जिसका हम दूसरे अर्थो में पलायनवाद कहेंगे, का बहुत ज़ोर था। तब यह प्रचार किया जाता था कि संसार में माया का बोलबाला है। जो मनुष्य को धर्म और ईश्वर से दूर ले जाती है। इसलिए संसार में रहकर भगवान की भक्ति नहीं हो सकती। भक्ति के लिए बस्ती से दूर जंगलों और पर्वतों पर जना चाहिए। उन्हीं विचारों का प्रचार योगी, हिन्दू, साधक, बोद्धि और जैनी सभी कर रहे थे। जिसके असर के कारण भक्ति करने के इच्छुक जंगलों, पहाड़ों, नदियों के किनारों या तीर्थ-स्थान पर जा डेरे लगाते थे। ये लोग आम संसारियों को माया-जाल में फँसे हुए और निम्न स्तरीय जीवन गुज़ार रहे बताते थे।

गुरु साहिबान ने त्यागवाद का सख्त विरोध किया। गुरु नानक देव जी ने पहाड़ों और जंगलों में जा के योगियों तथा अन्य त्यागियों को समझाया कि प्रभु भक्ति के लिए संसार त्यागने की जरूरत नहीं बल्कि मन पर काबू पाकर काम, क्रोध, लोभ, अहंकार तथा अन्य विकारग्रस्त रुचियों पर काबू पाने की ज़रूरत है। मन को जीतने वाला विकारों और सांसारिक रुचियों (पदार्थो के साथ मोह) पर फतेह प्राप्त कर लेता है: -

मन जीतै जगु जीतु ॥

गुरु जी के प्रभु के साथ जुड़ने (योग) की युक्ति को स्पष्ट करते हुए कहा-

जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी, जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥

जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ, जोगु न तीरथि नाईऐ ॥

अंजन माहि निरंजनि रहीऐ, जोगु जुगति इव पाईऐ ॥ (सूही, म: 1, 630)

गुरबाणी के उपदेश हैं कि सिख संसार में कार्य व्यवहार करते हुए और सारे फर्ज़ अदा करते हुए विचरण करना है पर

सांसारिक वस्तुओं (धन, जायदाद, संतान) के साथ मोह नहीं करना और शरीर को गुरु शब्द की अगवाई में चलकर विकार रहित रखना तथा मन को प्रभु संग जोड़ना है। यह सिखी का भक्ति मार्ग है।

जैसे जल महि कमलु निरालमु, मुरगाई नैसाणे ।।

सुरति शब्द भव सागरु, तरीए, नानक नामु वरवाणे ।।

रहहि इकांत ऐको मनि वसिआ, आसा माहि निरासो ।।

अगमु अगोचरु देखि दिखाऐ, नानक ता का दासो। (रामकली, म: 1 सिध गोष्टि, 138)

यथा

– मनि रे, ग्रिह ही माहि उदासु ।।

सचु संजमु करणी सो करे, गुरसुखि होइ परगासु ।। (सिरी राग, म: 3, 26)

यथा

– उदमु करेदिआ जीउ तूं, कमावंदिआ सुरव भुंचु ।।

धिआइदिआ तुं प्रभु मिलु, नानक उतरी चिंत ।। (वार गुज़री, म: 5,522)

यथा

– सतिगुर की ऐसी वडिआई ।। पुत्र कलत्र विचे गति पाई ।। (धनासरी, म: 1, 661)

– नानक सतिगुरि भेटिऐ, पूरी होवै जुगाति ।।

यथा

हसंदिआं, खेलंदिआं, पैंनदिआं खावंआिं, विचे होवै मुकति ।। (वार गुजरी, म: 5,522)

(10) **जत्थेबंदक अथवा संगति – धर्म :** सिक्रव धर्म ने जो लक्ष्य अपने सामने रखे उनकी प्राप्ति संगति रूप में अथवा लोगों को जत्थेबंद करके ही हो सकती थी। सिक्खी का उद्देश्य मनुष्य की निजी मुक्ति, कल्याण, आचरण का निर्माण या प्रभुसंग अभेदता तक ही सीमित नहीं बल्कि सिखी सारे संसार को प्रभु संग जुड़ा हुआ देखना चाहती है। समाज में उच्च पवित्र मूल्यों (सामाजिक मूल्यों) को प्रचलित करना और गलत रस्मों-रिवाजों को खत्म करना चाहती है, मनुष्य में रुपये पैसे की सांझी बाँट चाहती है और एक ऐसा राज्य-प्रबंध चाहती है जिसमें हर कोई आज़ादी के साथ रह सके, खुशियां मना सके और शासक लोक-सेवा की भावना के साथ राज्य-प्रबंध चलाएं। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सिखों की अत्याचारी और मनुष्यता के लिए विनाशकारी शक्तियों के साथ टक्कर होना स्वाभाविक बात है।

गुरु पातशाह ने उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आरंभ से ही सिख धर्म को संगति रूप दिया। गुरु नानक पातशाह ने अपने प्रचार दौरों में जगह-जगह संगतें स्थापित की और प्रचारक नियत किए। गुरु अमरदास जी और गुरु रामदास जी ने प्रचारकों (मंजियां, पीहड़े) और मसंदो की नियुक्ति करके संगतों को और मज़बूत किया। इन संगतों की दसवंध से गुरुद्वारे, सरोवर निर्मित किए गए, लंगर चलाए गए, अस्पताल खोले गए और नए नगर बसाए गए। इस तरह गुरु अर्जुन पातशाह के समय तक सिख एक मज़बूत जत्थेबंदी का रूप धारण कर गए, जिस कारण हकूमत को भी डर लगने लग गया क्योंकि गुरु साहिबान लोगों को हर तरह के अत्याचार का मुकाबला करने की प्रेरणा दे रहे थे। जत्थेबंद लोग ऐसे राज्य के अत्याचार का मुकाबला करने की प्रेरणा दे रहे थे। जत्थेबंद लोग ऐसे राज्य के लिए एक चुनौती थे। इसी कारण झूठे दोष लगाकर गुरु अर्जुन पातशाह को शहीद किया गया। परन्तु सिख जत्थेबंदी और मज़बूत होती गई तथा छठे पातशाह के समय, सिख समय की सरकार के साथ हथियारबंद टक्कर लेने लग गए तद्परान्त प्रत्येक गुरु-व्यक्ति ने अपने साथ हथियारबंद फ़ौजें रखीं।

दशम पिता ने सिक्खों को खंडे बाटे का अमृत छका कर सिख जत्थेबंदी को और मज़बूत किया तथा संगतों के समूचे संगठन को ''खालसा-पन्थ'' का नाम दिया। सिक्खों का धार्मिक माता-पिता जन्म स्थान, रोज़ाना जीवन सभी कुछ एक समान हो गया। पंच ककारी रहत (धारण करने) के साथ सिक्खों का बाहरी स्वरूप भी एक सा कर दिया गया। इस तरह सिक्ख जत्थेबंदी इतनी मज़बूत हो गई कि मुगल हकूमत के इसको खत्म करने के लिए सारा ज़ोर लगाने के बावजूद, हर तरह के अत्याचारों का सामना करती हुई, यह अपना राज्य-भाग कायम करने में कामयाब हो गई। यदि कही सिक्ख ''खालसा-पंथ'' के रूप में जत्थेबंद न हुए होते और पांच-करारी रहत के साथ अपना विलक्षण स्वरूप न कायम कर लेते तो ये सरकारों के अत्याचारों के मुकाबले करने की जगह पर आप ही खत्म हो जाते।

वर्तमान समय में भी सिक्खों ने जत्थेबंद हो कर गौरवमयी इतिहास सृजित किया है। फिरकापरस्त लोगों की और से सिखी को खत्म करने की चाल को असफल करके रख दिया है बल्कि खालसा-पंथ इस संसार में अपने लिए सम्मान-योग्य स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष में कूद पड़ा है-और अंत में विजय इसी की होगी। इस सब का सेहरा सिख जत्थेबंदी के सिर होगा, जिसका नाम खालसा पंथ है।

(11) **मानव-एकता का हामी-जातिवाद का विरोधी :-** सिक्ख धर्म, ब्राह्मणी धर्म को उपज, वर्ण-आश्रम धर्म का कट्टर विरोधी है। वर्ण-बांट के अनुसार पहले मनुष्य को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र आदि जातियों में बांटा गया है। शुद्रों को मानव समाज में पशुओं से भी बुरा दर्जा दिया गया है। इनको धर्म पुस्तकें पढ़ने धार्मिक कर्म करने और (हिन्दू) धर्म को धारण करने का कोई अधिकार नहीं था। ये बाकी के तीन वर्गो की निष्काम सेवा करते थे। नीच से नीच समझा जाने वाला काम करते थे पर तो भी उनसे दूर-दूर (फिटकार खाते) कराते थे। ये अछूत थे, जिन्हें स्पर्श मात्र से ही दूसरे लोग अपवित्र हो जाते थे। प्राचीन धर्म पुस्तकों के असर के कारण इन लोगों के साथ दुर्व्यवहार होता था। इन्हें गर्दन सीधी करके चलने का अधिकार नहीं था, बस्ती से दूर रहते थे और गरीबी तथा कंगाली का जीवन जीते थे।

गुरु साहिबान ने जातिवाद और शुद्रों के साथ हो रहे बर्ताव के विरुद्ध आवाज़ उठायी। अपने आप को इनका साथी बताया और कहा कि जहां नीच कहे जाने वालों की सेवा-संभाल होती है, वहां प्रभु की मेहर की नज़र होती है। गुरु साहिबान का फ़रमान है:-

नीचा अंदरि नीच जाति, नीची हूँ अति नीचु ।।

नानकु तिन कै संगि साथि, वडिआ सिउ किआ रीस ।।

जिथै नीच समालीअनि, तिथै नदरि तेरी बख्सीस ।। (सिरी राग, म: 1, 15)

मनुष्य में ऊंच-नीच, छूतछात, अमीर-गरीब का भेद मिटाने के लिए गुरु पातशाह ने लंगर की प्रथा जारी की जहां सब मिलकर एक पंगत में बैठ कर लंगर छकते थे। सरोवर और बावलियां बनाई जहां सब मिलके इकटठे स्नान करते थे। गुरुद्वारों में सबको एक जगह इकट्ठे संगत में बैठाया जाता था। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सब वर्णे और जातियों के लोगों को एक ही बाटे में से अमृत छकाया ताकि उनके मन में से जाति-पाति, छूतछात और ऊंच-नीच के विचार मूल से ही खत्म हो जावें। गुरबाणी में जात-पात के विचार का सख्त खंडन किया गया है। कुछ फ़रमान उदाहरण के लिए हाज़िर है:-

जाणुह जोति के पूछहु जाती, आगै जाती न हे ।। (आसा म: 1, 348)

यथा

-आगै जाति रूप न जाइ, तेहा होवै जेहे करम कमाइ ।। (आसा म: 3, 363)

यथा

-अगै जाति न जोरु है, अगै जीउ नवे।

जिनकी लेखैपति पवै, चंगे सेके केइ ।। (वार, आसा, म: 1, 469)

यथा

– जाति का गरबु न करि मुरख गवारा ।।

इस गरब ते चलहि बहुतु विकारा ।। (भैरउ, म: 3, 1128)

जहां सिक्ख धर्म ने जातिवाद का सख्त विरोध किया है, वहां मानवाद का प्रचार किया है। जब वाहिगुरु सबका सांझा पिता है और सब मनुष्य और स्त्रियां उसकी संतान है तब वैर – विरोध होना ही नहीं चाहिए –

ऐकु पिता ऐकस के हम बारिक, तू मेरा गुरु हाई ।। (सोरठि, म: 5, 611)

यथा

– एको पवणु, माटी सभ ऐका, सभ ऐका जोति सबईया ।। (माझ, म: 4,16)

यथा

– अवलि अलह नुरु उपाइया, कुदरति के सभ बंदे ।

एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ।।

लोगा भरमि न भुलहु भाई ।।

खालिकु खलक खलक महि खालिकु, पूर रहिओ सरब ठांई ।। (प्रभाती, कबीर जी, 1349)

दशम पिता गुरु गोबिन्द सिंघ जी, मानव एकता पर ज़ोर देते हुए फरमाते है : –

कोऊ भइयो मुंडीया, संनियासी कोऊ जोगी भइयो,

कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जती अनुमानबो ।।

हिन्दू तुरक, कोऊ राफजी इमाम साफी,

मानस की जात, सभै ऐकै पहिचानबो ।।

करता करीम सोई, राजक रहीम उई,

दूसरो न भेद कोई, भूल भ्रम मानबो ।।

ऐक ही की सेव, सब ही को गुरदेव ऐक,

ऐक ही स्वरूप सबै, ऐकै जोति जानबो ।। (अकाल अस्तुति)

सिक्ख धर्म से ज्यादा और कौन सा धर्म मानवादी और सरबतवादी हो सकता है, जो कि सुबह – शाम सबके भले की अरदास करे: –

'नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणै सरबत दा भला।'

(12) **स्त्री जाति का सम्मान :–** प्राचीन धर्मो में स्त्री को पुरुष के मुकाबले निम्न दर्जा गया है। हिन्दू धर्म के अनुसार स्त्री को पुरुष – सदस्यों की अधीनगी में ही रहना चाहिए। मनु, स्त्रियों को अज्ञानी और झूठ की मूर्तियां मानता है। उसके कहे अनुसार ये दू:खों का कारण है और ''ये बेवकूफों को ही नहीं, ज्ञानवानों और ऋषियों – मुनियों को भी गलत रास्ते पर डालकर

अपनी वासनाओं का शिकार बनाकर अपने अधीन कर लेती है।'' स्त्रियां शूद्रों की तरह अपना जनेऊ संस्कार नहीं करा सकती और गायत्री मंत्र भी नहीं पढ़ सकती। पुराणों में इनको जानलेवा ज़हर और नशीली शराब कहा गया है। स्त्री को, पति को परमेश्वर करके मानने को उपदेश दिया गया है, भले ही वह कुरूप, बुरे किरदार वाला जुएबाज और वेश्यागामी हो। यहां ही बस नहीं यदि पति मर जाए तो उसको पति के साथ चिता में जीवित जलना पड़ता था, जिसको 'सती' होना कहा जाता था। पति की मौत के बाद दूसरा ब्याह कराने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था। परन्तु पतियों के लिए सती होने का कोई विधान नहीं बनाया गया था और वे सरेआम एक से ज्यादा स्त्रियाँ रख सकते थे। देवदासियों के रूप में स्त्रियां पुजारियों की काम-भूख मिटाती थी।

जैनियों कि हिसाब से स्त्री कभी भी मुक्ति हासिल नहीं कर सकती। महात्मा बुद्ध जी ने भी सलाह दी थी कि स्त्रियों को भिक्षु संघ में दाखिल न करो, इससे बुद्ध धर्म की आयु घट जाएगी। योगमत वाले स्त्री को मादा-भेड़िया कहते थे जो तीनों लोगों कानाश कर रही है। इस्लाम में स्त्री मस्जिद में जाकर नमाज़ अदा नहीं कर सकती और न ही धर्म उपदेशक बन सकती है। स्त्री को घर की चारदीवारी और पर्दे में रखा जाता था जहां एक मुसलमान चार-चार ब्याह कर सकता था, वहां मुस्लिम औरत को ऐसा कोई अधिकार नहीं था। इसाई मत के अनुसार सब गुनाहों और पापों का स्रोत स्त्री है। शैतान इसको साधन बना के मनुष्य को गिराता है।

सिक्ख धर्म ने स्त्री को पुरुष के बराबर दर्जा दे कर एक इन्कलाबी काम किया। गुरु नानक साहिब के समय से ही स्त्रियां सिक्ख धर्म धारण करने लगीं। वे गुरुद्वारों में कीर्तन करती और सेवा करती थी। सिक्ख धर्म के अनुसार स्त्री या पुरुष होने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता क्योंकि वाहेगुरु की दरगाह में तो कर्मो पर फैसला होता है।

गुरु नानक साहिब ने ''आसा दी वार'' की 19वीं पाउड़ी के श्लोक में स्त्री की महत्व को बहुत अच्छी तरह बयान किया है। गुरुदेव फरमाते है (जिस औरत को पुराने धर्मो ने जगह-जगह निदिंत किया है, उसी औरत के कारण ही मनुष्य संसार में आता है। औरत से ही उसका रिश्ता और ब्याह आदि होते है तथा औरों से रिश्तेदारी बनती है। मनुष्य जीवन में स्त्री की इतनी आवश्यकता महसूस की जाती है कि एक औरत के मरने के बाद मनुष्य दूसरी औरत की तलाश शुरु कर देता है..... अंत में गुरदेव फरमाते है कि जिस औरत ने राजाओं (भगतों, फिलासफरों, बहादुरों) को जन्म दिया है, उसको बुरा कैसे कहा जा सकता है। वाहेगुरु की नज़रों में वह मुख (भले ही स्त्री का हो या पुरुष का) उज्जवल है जो हरि यश गाते है-

भंडि जंमीऐ भंडि निमीऐ, भंडि मंगणु वीआहु ।।

भंडहु होवे दोसती, भंडहु चलै राहु ।।

भंड मुआ, भंडु भालीऐ, भंडि होवै बंधानु ।।

सो किउ मंदा आखीऐ, जितु जंमहि राजान ।।

भंडहु ही भंडु उपजै, भंडै बाझु न कोइ ।।

नानक भंडै बाहरा, ऐको सचा सोइ ।।

जितु मुखि सदा सलाहीऐ, भागां रती चारि ।।

नानक ते मुख ऊजले, तितु सचै दरबारि ।। (वार आसा, 473)

सिख धर्म ने सती-प्रथा का घोर विरोध किया और गुरु अमरदास जी ने अकबर की इस प्रथा से विरुद्ध फ़रमान जारी कराया। स्त्रियों को घुंघट (पर्दा) निकालने की मनाही की गयी। स्त्रियों को धर्म प्रचारक नियुक्त किया गया और सिख मर्दो की तरह अमृतपान कराया गया। स्त्रियां अपने भाईयों के साथ युद्धों में हिस्सा लेती रही और राज्यकाज के काम को चलाती रहीं। आज सिक्ख स्त्री हर क्षेत्र में पुरुष की तरह यश कमा रही है। यह सब सिक्ख विचारधारा के इंकलाबी होने कारण ही है।

(12) **लंगर की मर्यादा केवल इस धर्म में है :** लंगर की मर्यादा गुरु नानक पातशाह जी ने करतारपुर में आरंभ की थी, धीरे -धीरे यह एक संस्था का रूप धारण कर गई और सिक्खों के सामाजिक जीवन का एक अलग होने वाला अंग बन गई।

यहां ही बस नहीं हुआ यह संस्था सिक्खी के न्यारेपन का एक कारण भी बनी क्योंकि सिक्ख धर्म ने इसको आरंभ किया और अभी तक सफलतापूर्वक अपनाया है।

लंगर जिसको विदेशी लोग 'मुफ्त अन्न-पानी के सेवा' का नाम देते हैं, जहां गुरुद्वारे में आई संगतों और मुसाफिरों की भूख दूर करता है। वहां एक ही पंगत में छकाया जाने के कारण जाति-पाति, ऊंच-नीच और अमीरी-गरीबी के विचारों को मानव-मन से निकालता है। इसके साथ ही सिक्खों के लिए सेवा का अवसर भी प्रदान करता है। जंगलों से लकड़ी काट कर लाना, अन्न-दाने की सेवा करना, लंगर तैयार करना और छकाना, जूठे बर्तन मांजना और साफ करना आदि सेवाएं लंगर के कारण सिक्खों में प्रचलित हुई जिन्होंने सिक्खों के अन्त:कारण से अहंकार-भाव को खत्म करके मानव-मात्र से प्यार करना सिखाया।

केवल सिक्ख ही नहीं, गुरु साहिब भी लंगर की सेवा में हिस्सा डालते रहे। गुरु नानक साहिब और गुरु अंगद देव जी स्वयं लंगर छकाने की सेवा करते रहे। गुरु अमरदास पातशाह ने इसको बाकायदा संस्था का रूप दिया। उन्होंने हुक्म किया कि जो भी गुरु दरबार में आवे वह लंगर ज़रूर छके। इसी कारण अकबर बादशाह और हरिपुर के राजा ने साधारण लोगों के साथ ज़मीन पर बैठकर लंगर छका था। श्री गुरु रामदास जी ने लंगर के उद्देश्य और कार्यक्षेत्र को और बढ़ाया। उन्होंने हुक्म किया कि मुसाफिरों और अभ्यागतों को भी प्रसाद-पानी छकाया जावे। श्री गुरु अर्जुन देव जी और उनकी सुपत्नी माता गंगा जी संगतों को पानी पिलाने की सेवा करा करते थे। दशम पातशाह के समय आनंदपुर साहिब में कई सिक्खों ने अपने-अपने लंगर जारी किए हुए थे। सब गुरुदेव स्वयं समय-समय पर भेष बनाकर इन लंगरों का निरीक्षण किया करते थे।

आज गुरुद्वारों में बिना जात-पात, धर्म देश, अमीर-गरीब के लिए सरायों में रहने का मुफ्त प्रबंध भी किया जाता है। हमारे लिए भले ही ये बातें साधारण ही हो पर अन्य धर्मावलम्बियां और खास तौर पर विदेशियों को ये बड़ी आश्चर्यजनक प्रतीत होती है और सिखी की ओर प्रेरित करती है।

(14) भक्ति के क्षेत्र में भी लोगों के सत्कार का पात्र बनी हैं, परन्तु वे अपने मानने वालों को सरबत के भले के लिए सच, इंसाफ और धर्म की रक्षा के लिए हथियारबंद-जत्थेबंदी का रूप नहीं दे सकी बल्कि उनके श्रद्धालु भी शक्ति के मार्ग को भक्ति और धर्म के मार्ग से अलग समझते रहे है। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि धर्म-कर्म और पाठ-पूजा करने-कराने के अधिकार के मालिक ब्राह्मणों ने कभी जंग नहीं की बल्कि ये जंग के नाम से ही घबराते रहे हैं। दूसरी ओर जंग का फर्ज़ निभाने वाले क्षत्रियों ने कभी धार्मिक अगवाई नहीं की। हां, भारत में बाहर से आए धर्म 'इस्लाम' ने जेहाद के रूप में' धार्मिक लड़ाईयां करने का उपदेश ज़रूर दिया है। गुरु नानक देव जी ने जहां निर्भय और आत्म निर्भर बनने का उपदेश दिया वहीं अपने अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ भी उठायी। बाबर के हमले के समय उन्होंने यहां के पठान हाकमों को फटकारा कि जब शस्त्र विद्या में प्रवीणता हासिल करने का समय था, तब वे रंगरलियां मनाने में मस्त रहे और जब शस्त्र चलाने का समय आया तब उन्होंने पुजारियों का मंत्र रटन और धर्म पुस्तकों का पाठ करने पर लगा दिया है परन्तु यह 'पाठ' किसी काम न आए। बाबर ने लूट मचायी और पठानों को हार का मुंह देखना पड़ा। जहां बाबर के सिपाही चुन-चुन के निशाने मारते रहे वहां पठान सिपाहियों के हाथों में बंदूकें केवल तिड़-तिड़ ही करती रहीं- हमलावरों का कुछ न बिगाड़ सकी। यह विचार गुरु पातशाह ने बाबर के हमले के बारे में आसा राग में उच्चारित शब्द में प्रकट किए हैं। जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पृष्ठ 417-418 पर दर्ज हैं। इस शब्द में शस्त्रों और शस्त्र विद्या की महत्ता दर्शायी गई है और वह विचार प्रकट किए गए है कि जब्र -जुल्म का मुकाबला हथियारों के बिना नहीं हो सकता। दूसरे पातशाह ने सिक्खों को शारीरिक तौर पर बलवान बनाने के लिए 'मल्ल-अखाड़े' कायम किए। पांचवे पातशाह के समय तक सिक्खों में शस्त्र विद्या प्रारंभ हो चुकी थी जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि पाचवें पातशाह ने (गुरु) हरगोबिन्द साहिब जी को बाबा बुड्ढ़ा जी पहले ही शस्त्र विद्या में माहिर थे और सिक्खों के भीतर शास्त्रों की सिखलाई पहले ही जारी थी।

गुरु हरगोबिन्द साहिब ने सिक्खों को हुक्म किया कि गुरु दरबार में हथियारों और घोड़ों की भेंट लेकर आया करें। उन्होंने सिक्खों की बाकायदा फ़ौज बनाई और मुगल हकूमत से चार जंग किए जिनमें सफलता प्राप्त की। सातवें, आठवें और नवम् पातशाह के समय भले ही कोई जंग नहीं हुई परन्तु सिक्ख फौज़ें बाकायदा कायम रही। दशम पिता गुरु गोबिन्द सिंह साहिब तो सारी उम्र अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए युद्धों में व्यस्त रहे। उन्होने अमृत छका कर ऐलान करते हुए कहा कि सच्चा व

नेक सिक्ख एक ही समय संत भी है और सिपाही भी। अमृत छकाते समय कंकारों में ''कृपान'' को शामिल किया गया ताकि सिक्ख शस्त्रधारी बने और जो शस्त्र धारण नहीं करता वह सिक्ख नहीं है। इस तरह सिक्ख भक्ति और शक्ति का मुजस्समा बन गए। गुरू जी ने शक्ति को बरतने के संबंध में ''जफरनामा'' में स्पष्ट हिदायत दी कि जब और सब यत्न निष्फल हो जाए तो मर्द का फर्ज बनता है कि वह हाथ में तलवार उठा लें:

चुंकार अज़ हमा हीलते दर गुजश्त ।।

हलाल अस्त बुरदन ब – शमशीर दस्त ।।

खालसा पंथ ने गुरु जी के दर्शाए मार्ग पर चलकर मुगल सल्तनत के साथ हथियारबंद टक्कर और अनेक शहिदियां प्राप्त करने के पश्चात अपना राज्य कायम किया । आज हालात ने सिक्खों को फिर ''शक्ति'' के बर्ताव का अहसास करा दिया है।

(15) **चढ़ती कला का मार्ग :** विरोधी हालाओं में अपने हौसले बुलन्द रखने को चढ़ती कला में रहना कहते है। विरोधी या बिखरे हालातों में जीत के प्रति आशावादी रहना और संघर्षशील रहना चढ़ती-कला वाले मनुष्य की निशानियां हैं। चढ़ती कला में रहने के लिए प्रभु में विश्वास और यह विश्वास कि प्रभु हमारा मित्र-सखा है और जीवन-संघर्ष में हमारा सहायक है बहुत ज़रूरी है। इसी विश्वास के कारण ही सिक्खों ने बहुत थोड़ी गिनती में होने के बावजूद शक्तिशाली मुगल हकूमत के साथ लम्बी टक्कर ली और उसको समाप्त करने के पश्चात् अपना राज्य कायम कर लिया।

दशम पातशाह के समय ही सिक्खों की मुगल सरकार के साथ टक्कर आरंभ हो गई थी। बाबा बंदा सिंघ की शहीदी के पश्चात समय के हाकमों ने सिक्खी और सिक्खों को खत्म करने के लिए पूरा ज़ोर लगा दिया। चुन-चुन के सिक्खों को शहीद किया गया। उनके पीछे गश्ती-फ़ौज़ें लगाई गई जो उनका शिकार करतीं। परन्तु सिक्खों ने हार न मानी बल्कि चढ़ती -कला में विचरण करते रहे । इस 40 साल के समय में कष्ट देकर शहीद करने का कोई ऐसा तरीका नहीं था जो समय की सरकार ने अपनाया न हो। सिक्खों के शरीरों के बंद-बंद (टोटे) किए गए, खोपड़ियां उतारी गई, शरीर आरों के साथ चीर दिए गए, चरखाड़ियों पर चढ़ाकर शहीद किए गए, पानी में आलुओं की तरह उबाले गए, फांसी चढ़ाए गए जीते जी ज़मीन में दबा के शहीद किया गया। (सिक्ख) स्त्रियों ने अपने प्यारे बच्चों की आंतों के हार अपने गले में डलवा लिए पर अडोल रही। सिक्खों का शिकार करने के लिए इनाम घोषित किए गए। जहां भी सिक्ख मिले वहां ही उसको कत्ल करने के शाही फ़रमान जारी किए गए। ऐसे अनेकों जुल्मों को सहते हुए भी सिक्ख चढ़ती-कला में रहे। कोई ताकत उनको अपने रास्ते से परे न ले जा सकी। ऐसे संकटों में से निकल के सिक्खों ने पहले मिसलों के रूप में और फिर महाराजा रणजीत सिंह की सरदारी के अधीन राज्य कामय किया। राज्य हाथ से निकल जाने के बाद अंग्रेज़ों के समय गुरुद्वारा सुधार लहर के मोर्चों में असहय और अकथनीय कष्ट उठाए। आज़ाद भारत में सन् 1984 में जिस तरह सिक्खों की कत्ल-ए-आम हुई यदि कोई और कौम होती तो शायद हमेशा के लिए खत्म हो जाती। पर सिक्खों के हौसले आज भी बुलंद है। वे चढ़ती कला में है और अपने गौरवशाली इतिहास का सृजन कर रहे है।

यह सब कुछ गुरु-उपदेशों भाव गुरबाणी को मानने के कारण ही संभव हो सका। गुरबाणी ने सिक्खों के मनों में विश्वास पैदा कर दिया था कि संसार में दुःख नाम की कोई चीज़ नहीं है और न ही ''हार'' है, बल्कि संसार जिसे दुःख समझता है उनमें से ही ''सुख'' उपजते हैं, संसार की नज़रों में जो ''हार'' है वह अल्पकालीन है -अंतिम तौर पर जीत होवेगी जो सदा कायम है-

दुखू नाही, सभु सुखु ही है रे, एकै एकी नेतै ।।

बुरा नही सभु भला ही है रे, हार नही सभ जेतै ।

सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै । (कानड़ा म: 5, 1302)

(16) **धर्म और राजनीति का सुमेल :** मानव जाति का इतिहास इस बात का गवाह है कि अलग-अलग समय पर 'धर्म' ने राजनीति पर प्रभाव डाला है। धर्म राजनीतिक-क्रांतियों का कारण बन है। भिन्न-भिन्न धर्मो में धार्मिक रहनुमाई करने वाली शख्सियतें ही राज्य भाग चलाती रही है। परन्तु कई लोग इन सच्चाईयों की ओर से आँखें मीचकर यही दुहाई दिए जा रहे हैं

कि धर्म और राजनीति अलग - अलग है और उनको इकट्ठा नहीं किया जा सकता।

मनुष्य भले राजनीतिक से जितना मर्ज़ी दूर रहने की कोशिश करे परन्तु राजनीति उसके जीवन पर अपना प्रभाव ज़रूर डालती है। इसी तथ्य को स्वीकार करते हुए गुरु - साहिबान ने धर्म और राजनीतिक के सुमेल को उचित बताया है।

सिक्ख धर्म का प्रकाश करने वाले गुरु नानक देव जी, धर्म प्रचार के साथ - साथ लोगों में राजनीतिक जागृति भी पैदा करते रहे। उन्होंने समय के हाकिमों के बारे में निधड़क होकर अपने विचार प्रकट किए और राजनीति में दख़ल दिया। उन्होंने अपने रब्बी कलाम से राजाओं को कसाई, रक्त पीने वाले, जनता का शिकार करने वाले और रक्त पीने वाले शेर कहा। बाबर के हमले के समय बाबर को मुंह पर जाबर कहा और लोगों की अगवाई करते हुए बाबर की कैद काटी। हरेक गुरु व्यक्ति ने अपने समय में सिक्खों को राजनीतिक चेतनता प्रदान की। सिक्ख लहर के बढ़ रहे राजसी प्रभाव के कारण ही जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव जी को शहीद कर दिया पर ऐसा करने से सिक्ख लहर राजनीतिक क्षेत्र में बल्कि और ज़ोर - शोर से कूद पड़ी। गुरु हरगोबिन्द साहिब ने गुरुगद्दी के समय दो तलवारें पहनी - एक धार्मिक प्रभुसत्ता (पीरी) की और दूसरी राजनीतिक प्रभुसत्ता (मीरी) की। उन्होंने दिल्ली के तख्त के मुकाबले में, श्री अमृतसर में ''अकाल तख्त'' की सृजना की। आप वहां राजाओं की तरह विराजमान होने लगे और सिख उनको ''सच्चा पातशाह'' कहने लगे क्योंकि समय के हाकम को वे ''झूठा बादशाह'' समझते थे। गुरु जी के हुक्मों पर फूल चढ़ाते हुए सिक्ख यहां हथियारों और घोड़ों की भेंट लेकर जाज़िर होने लगे। नित जंगी मश्कें होती और सिक्खों में जोश भरने के लिए ढाडी वीर - रसी वारों का गायन करते उस समय से लेकर अब तक ''अकाल तख्त'' सिक्खों की राजसी सरगर्मियों का केन्द्र बना रहा है। इसके सामने झूल रहे दो निशान साहिब भी ''राजनीति और धर्म के सुमेल'' के प्रतीक है।

गुरु तेग बहादुर साहिब ने हिन्दुस्तान में जगह - जगह जाकर धर्म प्रचार के साथ - साथ यह प्रचार भी किया कि समय की सरकार के अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए निडर और निर्भय हुए व बहादुर बनो। गुरु पातशाह ने कहा कि ज्ञानवान और सच्चा धर्मो वही है जो न अत्याचार करता है और न ही अत्याचार सहता है।

भै काहु को देत नहि, नहि भै मानत आनि ।।

कहु नानक सुन रे मना, गिआनी ताहि बिखानि ।।

गुरु गोबिन्द सिंह साहिब ने तो एलान ही कर दिया कि वे सदियों से पद दलित हुए मनुष्यों को देश के राजे बना देंगे। गुरु साहिब के विचारों को सिक्ख इतिहासकारों ने इस तरह प्रकट किया है:

जिनकी जात और कुल माहीं, सरदारी ना भई किदाही ।

तिनही को सरदार बनाऊँ, तबै गोबिन्द सिंघ नाम कहाऊं ।

गुजर, लुहार, अहीर, कमजात, कंबो शुद्र, ना को पुछै बात ।

झीवर, नाई और रोड़े, घूमिआर, सैणी, सुनिआरे, चुहड़े चमिआर ।

भट ओ ब्राह्मण, हुते मंगवार, बहुरूपीऐ, लुबाणे, और घूमिआर ।

इन गरीब सिखन को दै पातशाही, याद करें हमरी गुरिआई ।

यथा

- राज करेगा खालसा, आकी रहे ना कोइ ।

खुआर होइ सभ मिलंगे, बचे शरन जो होइ ।

अत: गुरबाणी और गुरु - इतिहास इस बात का सबूत है कि सिक्ख धर्म में ''धर्म और राजनीति'' ''मीरी और पीरी'' की आपस में गहरी सांझ है। यह सांझ ही है जिस के कारण सिक्ख मुगलों का राज्य समाप्त करने के बाद, अंग्रेज़ों की गुलामी भी

उतारने के योग्य हुए थे। 'गुरुद्वारा सुधार लहर' भले आंरभ में एक धार्मिक लहर थी पर इसने राजनीतिक उथल-पुथल भी पैदा कर दी। ''चाबियों के मोर्चो'' की जीत के बाद महात्मा गांधी ने सिक्खों को भेजी तार में यह कहा था-''यह भारत की आज़ादी की जंग की पहली फैसलाकुन जीत है।''

(17) **नई आर्थिक विचारधारा :** सिक्ख धर्म की आर्थिक विचारधारा के तीन पक्ष हैं:-

(1) धर्म की किरत अथवा मेहनत की कमाई ।

(2) कमाई में से समाज-सेवा के लिए दसवंध (दसवां हिस्सा) ।

(3) समाज में अमीरी-गरीबी की खाई मिटाने के लिए रुपए पैसे की सांझी बांट ।

सिक्ख धर्म, धर्म की कमाई अथवा सच्ची पवित्र कमाई पर ज़ोर देता है। गुरु नानक पातशाह ने फ़रमाया है कि जो मनुष्य सच्ची व पवित्र कमाई करता है तथा उसमें से ज़रूरतमंदों की सहायता करता है, वह ही प्रभु को मिलने का रास्ता जान सकता है:-

घालि खाइ, किछु हथहु देइ ।।

नानक राहु पछाणहि सेइ ।। (सारंग की वार, श्लोक, म: 1, 1245)

मेहनत की कमाई करने की जगह पर जो धन प्राप्ति की खातिर लोगों का हक मारते हैं वे धर्मी नहीं कहला सकते और जो लोग रिश्वतखोरी से धन एकत्र कर रहे हैं वे प्रभु के दर पर प्रवान नहीं होते:-

जे रतु लगै कपड़ै, जामा होइ पलीतु ।

जो रतु पीवहि माणसा, तिन कउ निरमलु चीतु ।।

नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ।।

अवर दिवाजे दुनी के, झूठे अमल करेहु ।। (वार माझ, 140)

यथा

-हकु पराइया नानका, उस सूअर उस गाइ ।।

गुरु पीरु हामा ता भरे, जा मुरदारू न खाइ ।। (श्लोक, म: 1, वार माझ, 141)

धन एकत्र करने की आदत लोगों में आम पाई जाती है। पर सतगुरु फरमाते हैं कि बहुत धन तो झूठ बोल के, हेराफेरियां करके और दूसरों का हक मार कर ही एकत्र किया जा सकता है। पर जिस धन की खातिर इतने पाप करने पड़ते हैं, वह मरते समय मनुष्य के साथ नहीं जाता-

इस जर कारण घणी विगुती, इनि जर धणी खुआई ।।

पापा बाझहु होवै नाही, मुइआ साथ न जाई ।। (आसा, म: 1, 417)

सिक्ख धर्म का यह सिद्धांत है कि समाज में रुपये पैसे की बराबर बांट होनी चाहिए। गुरु अर्जुन पातशाह फरमाते है कि जिसके पास धन की बहुलता है वह इसको सम्हालने की चिंता में ही रहता है। (इसलिए तो लोग इंकम टैक्स तथा और टैक्सी की चोरी व ब्लैक मार्केटिंग करते हैं।) और जिस मनुष्य के पास-रुपया पैसा ज़रूरत से कम है, वह सारी उम्र रोटी, कपड़ा और मकान की प्राप्ति की खातिर माया के चक्करों में पड़ा रहता है। इसलिए आदर्श समाज तो वह ही है जो इन दोनों व्यवस्थाओं (बेहद अमीरी और बहुत गरीबी) से मुक्त है:

जिसु ग्रिहि बहुत, तिसै ग्रिही चिंता ।।

जिसु ग्रिही थोरी, सु फिरै भ्रमंता ।।

दुहू विवस्था ते जो मुकता, सोई सुहेला भालीऐ ।। (मारू, म: 5, घर 8 अंजुलीआं, 1011)

(18) **मनुष्य जाति की निष्काम सेवा :** सिक्ख धर्म ने अपने मानने वालों को समूची मानव जाति की, बिना धर्म, जात, देश, नस्ल, लिंग के भेद के, निष्काम सेवा करने का उपदेश दिया है। सारा संसार प्रभु की संतान है। सब ही में प्रभु की ज्योति है, इसलिए कहा गया है कि सेवा करने से प्रभु की निकटता हासिल होती है:

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ।

ता दरगह बैसणु पाईऐ ।। (सिरी राग, म: 1, 26)

भले सेवा का क्षेत्र पूरा संसार ही है, पर इसका आरंभ गुरुद्वारे से होता है। लंगर पकाने, जूठे बर्तन मांजने, संगतों में पंखा करने की सेवा, संगतों के जोड़े साफ करने की सेवा, ज़रूरतमंदों की धन, वस्त्रों आदि के साथ सेवा, सब कुछ सिक्ख गुरुद्वारे से ही सिखता है।

सर्वोत्तम सेवा लोगों को प्रभु प्यार की लड़ी में पिरोने की है। गुरु नानक पातशाह ने घर के सुख त्याग कर और अनेकों मुश्किलों का सामना करते हुए बड़े-बड़े और लम्बे अरसे की प्रचार-यात्राओं में मनुष्य जाति को प्रभु संग जोड़ने की सेवा की। दूसरे, तीसरे और चौथे पातशाह ने 'सिक्ख के रूप में' सेवा करने के कई उदारहरण पेश किए। गुरु अर्जुन पातशाह ने कुष्टों की सेवा के लिए पिंगलवाड़े और बीमारों की सेवा के लिए दवाखाने स्थापित किए। अकाल पड़ते समय जगह-जगह जाकर गरीबों और बीमारों की हाथों से सेवा की। जो सिक्ख ''सेवा'' नहीं करते वे गुरु को स्वीकृत नहीं होते। गुरु गोबिन्द सिंह साहिब ने उस सिक्ख के हाथों पानी पीने से इंकार कर दिया था, जिसने कभी हाथों से सेवा नहीं की थी। भाई कन्हैया जी पर निष्काम सेवा के कारण ही गुरु पातशाह मेहरबान हुए थे। सिक्खों ने भी संगतों की सेवा के समक्ष सांसारिक प्राप्तियों को तुच्छ समझा। (नवाब) कपूर सिंह जी के जकरिया खान द्वारा भेजी नवाबी लेने से तो स्पष्ट मना कर दिया पर संगतों और सिंघों के घोड़ों की सेवा को न त्यागा। संगातों के हुक्म सिर-माथे मानते हुए उन्होंने विनती की कि वे नवाबी लेने को तैयार है पर उनसे संगतों के लंगर और पंखें की सेवा न छिनी जावे तथा गुरु के सिघों के घोड़ों की सेवा-संभाल न छिनी जावे।

सिक्खों ने मानव जाति की सेवा जान पर खेलकर की है। गुरु साहिबान उनके समय के तथा पिछले समय के सिक्खों ने असह्य और अकथनीय कष्ट सहन करके जो शहीदियां प्राप्त की वे भी मनुष्य जाति की सेवा के लिए थीं। लोगों को समय के हाकमों के अत्याचारों से बचाने के लिए थीं।

इस तरह सिक्खों के लिए सेवा का क्षेत्र गुरुद्वारों से आरंभ हो कर सारा संसार ही बन जाता है, जिसमें समाज-सुधार की सेवा से लेकर जब्र-जुल्म और धक्केशाही का शिकार हो रहे लोगों की खातिर अपना जीवन कुर्बान की सेवा भी शामिल है। इस तरह सेवा द्वारा सिक्ख सही शब्दों में सरबतवादी बनता है।

(19) **संपूर्ण और न्यारा धर्म :** सिक्ख धर्म के कुछ प्रमुख सिद्धान्तों पर अब तक जो विचार हमने किये हैं इससे यह नतीजा सहज ही निकाला जा सकता है कि सिक्ख धर्म की अपनी नई और विलक्षण विचारधारा है। गुरु साहिब ने धर्म के क्षेत्र में ऐसे विचार प्रकट किए हैं जो पहले किसी धार्मिक नेता ने प्रकट नहीं किए थे। जहां सिक्खों के पास साहब श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के रूप में नवीन और विलक्षण विचारधारा, वहां अपनी अलग रहित मर्यादा, अलग धर्म मंदिर (गुरुद्वारे) अलग इतिहास और ऐतिहासिक स्थान है। इस तरह सिक्ख धर्म एक न्यारा धर्म है और सिक्ख समाज (सिक्ख पंथ) एक न्यारा और आदर्शक समाज है।

सिक्ख धर्म के बारे में कई विद्वानों ने अनेकों प्रकार के भ्रम पैदा किए हुए हैं। कोई इसको ''हिन्दू धर्म का सुधारा हुआ रूप'' कहता है, कोई कहता है ''सिक्ख धर्म'' है तो हिन्दुओं का फिरका, पर इसको अस्तित्व में लाने का

कारण इस्लाम है। कई कहता है कि ''गुरु पातशाह हिन्दू अवतारों से बहुत ऊँचे थे और गुरुबाणी कुरान शरीफ की ही व्याख्या है तथा गुरु नानक साहिब एक सच्चे मुसलमान थे, कोई कहता है कि यह हिन्दु और मुसलमान विचारों का मिश्रण है...... आदि।

सिक्खों को इस तरह के भ्रमों से निकालने के लिए भाई काहन सिंह जी नाभा ने ''हम हिन्दू नहीं'' नामक पुस्तक लिखी थी। भाई साहिब डॉ. वीर सिंह जी सिक्ख धर्म को एक पूर्ण और स्वतंत्र धर्म मानते हुए कहते हैं, सिक्खों को अपने मति की खूबियों पर गौरव होना चाहिए और अपने इस Fact (अमर तथ्य) पर टिके रहना चाहिए कि सिखमति एक असलीयत (Original) वाला सत्य धर्म है, एक (ECLECRIC) सांठ-गांठ नहीं।

मुहसिन फानी, जो कि गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के समय भारत आया था, लिखता है कि सिक्ख धर्म ब्राह्मणी धर्म से अलग हो कर प्रफुल्लित हो रहा है : ''सिक्ख हिन्दू मंत्रों का पाठ नहीं करते, उनके मंदिरों की पूजा नहीं करते और न ही उनके अवतारों को मानते हैं। हिन्दू संस्कृत कर देवबाणी जान कर के बड़ी ऊँची पदवी देते हैं, पर सिक्खों के लिए यह साधारण भाषा है और कोई विशेषता नहीं रखती । हिन्दुओं के धार्मिक संस्कार सिक्खों में नहीं हैं। सिक्खों के लिए खाने पीने और पहरावे की बंदिश नहीं है।

इस तरह कई पश्चिमी विद्वानों की यह राय है कि सिक्खी नवीन और स्वंतत्र है। मिस्टर मैकालिफ लिखते है : यहां एक ऐसा धर्म पेश किया जा रहा है कि इस्लामी, शामी तथा इसाई प्रभावों से बिल्कुल पाक है। अकाल पुरख-वाहिगुरु के एक होने के निश्चय पर निर्भर हो के इस धर्म के हिन्दू ख्यालों को तर्क किया और ऐसी सदाचारी, व्यवहारिक और धार्मिक संस्थाओं की नींव रखी जोकि गुरु नानक के देश काल अथवा उनके आस-पास से बिल्कुल निराली और नवीन थी। इस धर्म से ज्यादा मौलिकता रखने वाले धर्म या इसके सदाचारी नियमों से ज्यादा प्रामाणिक और विशाल मत दुनिया में से ढूंढना कठिन है। **(मिस डारोथी फील्ड** भी इस तरह लिखती हैं **गुरु ग्रन्थ (साहिब) की विचारधारा से यह बात पक्की तरह सिद्ध हो जाती है कि सिक्ख धर्म, दुनिया में एक नया और बिल्कुल अलग धर्म है। मनों को आकर्षित कर सकता है। यह हकीकत में एक अमली धर्म है और अमली ज़िन्दगी में सरलता से व्यवहार में लाया जा सकता है। यदि इस धर्म को मानव जीवन के लिए ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाने के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह धर्म संसार में तकरीबन एक और केवल एक ऐसा ऊँचा धर्म है।**

जो सिक्ख धर्म एक नवीन और विलक्षण विचारधारा वाला होता हुआ मानव-जाति द्वारा अपनाया जाने वाला अमली धर्म है और अपने अनुयायियों के मनों में सरबत के भले ही भावना भर के उनको मानव जाति की सेवा में लगा रहा है।

• • • • • •

जसबीर सिंह
Ph. : (0172-2696891),
09988160484

Type Setting :
Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882